सामी सभ जो देवु, आहे पुरखारथु पांहिंजो,
कोड़िनि में को हिकिड़ो, गुरमुखु ज़ाणे भेदु
अविद्या जो अहन्मेवु, कढियो जंहिं अंदर मों.

सामी साहब कहते हैं कि सभी मनुष्यों का देव उनका पुरुषार्थ (लक्ष्य, जतन, यत्न) है। यह भेद या रहस्य करोड़ों मनुष्यों में कोई एक गुरुमुख ही जानता है। अर्थात् एक ऐसा गुरुमुख, जिसने अपने भीतर से, हृदय से अविद्या का अहंकार, अहंभाव (अहन्मेव, अहंमति, अज्ञान) निकाल दिया है।

भारतीय धर्म-ग्रंथों में मनुष्य के लिए चार पुरुषार्थ बतलाए गये हैं, जिनको प्राप्त करना मनुष्य का कर्त्तव्य माना गया है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नामक ये चार पुरुषार्थ मनुष्य के 'जीवन-मूल्य' हैं। आज इन में बहुत परिवर्तन हो गया है। अर्थ को अधिक महत्व प्राप्त हो गया है तथा अन्य मूल्य भी इन में समाविष्ट हो गये हैं। किन्तु इन चारों के केन्द्र में 'पुरुषार्थ' समाया हुआ है। अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ ही करना पड़ता है। अर्थात् प्रयत्न, ढाढ़स या हिम्मत का ही सहारा लेना पड़ता है। इसलिए प्रयत्न और हिम्मत ही सबसे बड़ा पुरूषार्थ मानना चाहिए। महाकवि सामी ने भी अपने श्लोक में इस पुरुषार्थ को ईश्वर मानकर उसका महत्व बतलाया है।

यह भूमि 'कर्मभूमि' है। यहाँ पर कर्म करने ही पड़ते हैं। कोई वस्तु प्राप्त करने के लिए प्रयत्न तो करने ही पड़ते हैं। बिना प्रयत्न के कुछ भी मिलने वाला नहीं है। यह प्रयत्न ही मनुष्य का पुरुषार्थ है। कर्मरूपी यत्न, कोशिश, प्रयास ही 'देव' है। प्रयत्न करने की शक्ति धारण करने से ही सफलता मिल सकती है। जिस उद्देश्य, को पूर्ण करने के लिए मनुष्य यत्न करता है, वह मनुष्य प्रयोजन रूप 'पुरुषार्थ' शब्द से कहा जाता है। धर्म का आचरण करना भी उसके भावी सुख-रूप प्रयोजन के लिए है। इसी प्रकार अर्थोपार्जन भी पुरुषार्थ रूप प्रयोजन है। काम या काम-सुख की गणना भी पुरुषार्थ रूप से की गयी है। कोई भी साधारण जन इस काम-सुख का त्याग नहीं कर सकता। सबसे उत्तम पुरुषार्थ, पुरुष का प्रयोजन है मोक्ष की प्राप्ति करना। इसी के निमित्त उत्तम मोक्षोपयोगी धर्म भी पुरुषार्थ रूप से ही समझा जाता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि मनुष्य का कोई भी प्रयोजन हो, जिसके लिए मनुष्य उद्योग और यत्न करता है, वह सब पुरुष का, मनुष्य का 'पुरुषार्थ' है और मोक्ष ही सब की इच्छा का पुरुषार्थ है, सब का परम प्रयोजन है।

■